

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - अष्टम

दिनांक -18- 09 - 2021

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक - पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज शब्दालंकार के बारे में अध्ययन करेंगे

शब्दालंकार

शब्दालंकार की परिभाषा

जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्यों को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। यानि किसी काव्य में कोई विशेष शब्द रखने से सौन्दर्य आए और कोई पर्यायवाची शब्द रखने से लुप्त हो जाये तो यह शब्दालंकार कहलाता है।

शब्दालंकार के भेद

- अनुप्रास अलंकार
- यमक अलंकार
- श्लेष अलंकार

अनुप्रास अलंकार- जब किसी काव्य को सुंदर बनाने के लिए किसी वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो तो वह अनुप्रास अलंकार कहलाता है। किसी विशेष वर्ण की आवृत्ति से वाक्य सुनने में सुंदर लगता है।

जैसे- चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही थी जल थल में।

ऊपर दिये गए उदाहरण में आप देख सकते हैं की 'च' वर्ण की आवृत्ति हो रही है और आवृत्ति हों से वाक्य का सौन्दर्य बढ़ रहा है। अतः यह अनुप्रास अलंकार का उदाहरण होगा।

यमक अलंकार- जिस प्रकार अनुप्रास अलंकार में किसी एक वर्ण की आवृत्ति होती है उसी प्रकार यमक अलंकार में किसी काव्य का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए एक शब्द की बार-बार आवृत्ति होती है। दो बार प्रयोग किए गए शब्द का अर्थ अलग हो सकता है।

जैसे- काली घटा का घमंड घटा।

यहाँ 'घटा' शब्द की आवृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थ में हुई है। पहले 'घटा' शब्द 'वर्षाकाल' में उड़ने वाली 'मेघमाला' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और दूसरी बार 'घटा' का अर्थ है 'कम हुआ'। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

श्लेष अलंकार- श्लेष अलंकार ऊपर दिये गए दोनों अलंकारों से भिन्न है। श्लेष अलंकार में एक ही शब्द के विभिन्न अर्थ होते हैं।

जैसे- रहीमन पानी राखिए बिन पानी सब सून पानी गए न ऊबरे मोई मानस चून।

इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं।

पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका मूल्यहास होता है। अतः यह उदाहरण श्लेष के अंतर्गत आएगा।